وَ صَاحِبَتِهٖ وَ بَنِیْهِؕ ﴿۳۶﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ یَوْمَىٕذٍ شَاْنٌ یُّغْنِیْهِؕ ﴿۳۷﴾

और जोरू (बीवी) और बेटों से[26] इन में से हर एक को उस दिन एक फ़िक्र है कि वोही उसे बस है[27]

وُجُوْهٌ یَّوْمَىٕذٍ مُّسْفِرَةٌۙ ﴿۳۸﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌۚ ﴿۳۹﴾ وَ وُجُوْهٌ یَّوْمَىٕذٍ

कितने मुंह उस दिन रोशन होंगे[28] हंसते खुशियां मनाते[29] और कितने मूंहों पर उस दिन

عَلَیْهَا غَبَرَةٌۙ ﴿۴۰﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌؕ ﴿۴۱﴾ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ۠ ﴿۴۲﴾ ع

गर्द पड़ी होगी उन पर सियाही चढ़ रही है[30] येह वोही हैं काफ़िर बदकार

اٰیاتها ٢٩ | ٨١ سُوْرَةُ التَّكْوِیْرِ مَكِّیَّةٌ ٧ | رکوعها ١

सूरए तक्वीर मक्किय्या है, इस में उन्तीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْﭪ ﴿۱﴾ وَ اِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْﭪ ﴿۲﴾ وَ اِذَا الْجِبَالُ

जब धूप लपेटी जाए[2] और जब तारे झड़ पड़ें[3] और जब पहाड़

سُیِّرَتْﭪ ﴿۳﴾ وَ اِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْﭪ ﴿۴﴾ وَ اِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْﭪ ﴿۵﴾ وَ

चलाए जाएं[4] और जब थलकी (गाभन) ऊंटनियां[5] छूटी फिरें[6] और जब वह़्शी जानवर जम्अ़ किये जाएं[7] और

اِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْﭪ ﴿۶﴾ وَ اِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْﭪ ﴿۷﴾ وَ اِذَا الْمَوْءٗدَةُ

जब समुन्दर सुलगाए जाएं[8] और जब जानों के जोड़ बनें[9] और जब ज़िन्दा दबाई हुई से

26 : इन में से किसी की त़रफ़ मुल्तफ़ित (मुतवज्जेह) न होगा अपनी ही पड़ी होगी। **27 :** क़ियामत का ह़ाल और उस के अहवाल बयान फ़रमाने के बा'द मुकल्लफ़ीन का ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि वोह दो क़िस्म हैं सईद और शक़ी, जो सईद हैं उन का ह़ाल इर्शाद होता है : **28 :** नूरे ईमान से या शब की इबादतों से या वुज़ू के आसार से **29 : अल्लाह** तआ़ला के ने'मत व करम और उस की रिज़ा पर। इस के बा'द अश्क़िया का ह़ाल बयान फ़रमाया जाता है : **30 :** ज़लील ह़ाल वह़्शत ज़दा सूरत। **1 :** ''सूरए कुव्विरत'' मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, उन्तीस आयतें, एक सो चार कलिमे, पांच सो तीस ह़र्फ़ हैं। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिसे पसन्द हो कि रोज़े क़ियामत को ऐसा देखे गोया कि वोह नज़र के सामने है तो चाहिये कि सूरए ''اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ'' और सूरए ''اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ'' और सूरए اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ पढ़े। (ترمذی) **2 :** या'नी आफ़्ताब का नूर ज़ाइल हो जाए **3 :** बारिश की त़रह़ आस्मान से ज़मीन पर गिर पड़ें और कोई तारा अपनी जगह बाक़ी न रहे **4 :** और गुबार की त़रह़ हवा में उड़ते फिरें **5 :** जिन के ह़म्ल को दस महीने गुज़र चुके हों और बियाहने का वक़्त क़रीब आ गया हो **6 :** न उन का कोई चराने वाला हो न निगरान, उस रोज़ की दहशत का येह आ़लम हो, और लोग अपने ह़ाल में ऐसे मुब्तला हों कि उन की परवाह करने वाला कोई न हो। **7 :** रोज़े क़ियामत बा'दे बअ़्स कि एक दूसरे से बदला लें, फिर ख़ाक कर दिये जाएं। **8 :** फिर वोह ख़ाक हो जाएं **9 :** इस त़रह़ कि नेक नेकों के साथ हों और बद बदों के साथ या येह मा'ना कि जानें अपने जिस्मों से मिला दी जाएं या येह कि अपने अ़मलों से मिला दी जाएं या येह कि ईमानदारों की जानें हूरों के और काफ़िरों की जानें शयात़ीन के साथ मिला दी जाएं।

www.dawateislami.net

سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِاَیِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَ اِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ﴿١٠﴾ وَ اِذَا السَّمَآءُ

पूछा जाए[10] किस ख़ता पर मारी गई[11] और जब नामए आ'माल खोले जाएं और जब आस्मान जगह से

كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَ اِذَا الْجَحِیْمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾ وَ اِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾ عَلِمَتْ

खींच लिया जाए[12] और जब जहन्नम को भड़काया जाए[13] और जब जन्नत पास लाई जाए[14] हर जान को मा'लूम

نَفْسٌ مَّاۤ اَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾

हो जाएगा जो हाज़िर लाई[15] तो क़सम है उन[16] की जो उलटे फिरें सीधे चलें थम रहें[17]

وَ الَّیْلِ اِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾ وَ الصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ

और रात की जब पीठ दे[18] और सुब्ह की जब दम ले[19] बेशक येह[20] इ़ज़्ज़त वाले रसूल[21] का

كَرِیْمٍ ﴿١٩﴾ ذِیْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِی الْعَرْشِ مَكِیْنٍ ﴿٢٠﴾ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِیْنٍ ﴿٢١﴾

पढ़ना है जो कुव्वत वाला है मालिके अ़र्श के हुज़ूर इ़ज़्ज़त वाला वहां उस का हुक्म माना जाता है[22] अमानत दार है[23]

وَ مَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢٢﴾ وَ لَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِیْنِ ﴿٢٣﴾ وَ مَا هُوَ

और तुम्हारे साहिब[24] मज्नून नहीं[25] और बेशक उन्हों ने उसे[26] रोशन कनारे पर देखा[27] और येह नबी

عَلَی الْغَیْبِ بِضَنِیْنٍ ﴿٢٤﴾ وَ مَا هُوَ بِقَوْلِ شَیْطٰنٍ رَّجِیْمٍ ﴿٢٥﴾ فَاَیْنَ

ग़ैब बताने में बख़ील नहीं और कुरआन मरदूद शैतान का पढ़ा हुवा नहीं फिर किधर

تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿٢٧﴾ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ

जाते हो[28] वोह तो नसीहत ही है सारे जहां के लिये उस के लिये जो तुम में

یَّسْتَقِیْمَ ﴿٢٨﴾ وَ مَا تَشَآءُوْنَ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿٢٩﴾ ع ٢٩

सीधा होना चाहे[29] और तुम क्या चाहो मगर येह कि चाहे **अल्लाह** सारे जहान का रब

10 : या'नी उस लड़की से जो ज़िन्दा दफ़्न की गई हो, जैसा कि अ़रब का दस्तूर था कि ज़मानए जाहिलिय्यत में लड़कियों को ज़िन्दा दफ़्न कर देते थे। 11 : येह सुवाल क़ातिल की तौबीख़ के लिये है ताकि वोह लड़की जवाब दे कि मैं बे गुनाह मारी गई। 12 : जैसे ज़ब्ह की हुई बकरी के जिस्म से खाल खींच ली जाती है। 13 : दुश्मनाने खुदा के लिये 14 : **अल्लाह** तआ़ला के प्यारों के 15 : नेकी या बदी। 16 : सितारों 17 : येह पांच सितारे हैं जिन्हें ख़म्सए मुतह़य्यरह कहते हैं : (1) ज़ुह़ल, (2) मुश्तरी, (3) मिर्रीख़, (4) ज़ुहरा, (5) उ़त़ारिद (كَذَا رُوِیَ عَنْ عَلِيِّ بْنِ اَبِیْ طَالِبٍ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔) 18 : और उस की तारीकी हलकी पड़े 19 : और उस की रोशनी खूब फैले 20 : कुरआन शरीफ़ 21 : ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْهِ السَّلَام 22 : या'नी आस्मानों में फ़िरिश्ते उस की इता़अ़त करते हैं। 23 : वह़्ये इलाही का 24 : ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم 25 : जैसा कि कुफ़्फ़ारे मक्का कहते हैं 26 : या'नी जिब्रीले अमीन को उन की अस्ली सूरत में 27 : या'नी आफ़्ताब के जाए तुलूअ़ पर 28 : और क्यूं कुरआन से ए'राज़ करते हो 29 : या'नी जिस को ह़क़ का इत्तिबाअ़ और इस पर क़ियाम मन्ज़ूर हो।

www.dawateislami.net